# डॉ० सुभद्र झा

जन्म : 1911 ई०।

जन्म-स्थान : नागदह, मधुबनी।

कृति : **मौलिक–'प्रवास जीवन'**, **'यात्रा-प्रकरण-शतक'** तथा **'नातिक पत्रक उत्तर'** आदि।
'फॉरमेशन ऑफ मैथिली लैंग्वेज' (शोध-ग्रन्थ) तथा 'सौंग्स ऑफ विद्यापति'।
**अनुवाद–** 'प्राकृत व्याकरण' एवं 'संस्कृत साहित्यक इतिहास'क अंग्रेजीमे अनुवाद, वाणभट्ट कृत 'कादम्बरी'क अनुवाद।
पत्र शैलीमे अथवा अन्य रूपेँ अनेक निबंध विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित।

पुरस्कार : 1986 ई० मे साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा **'नातिक पत्रक उत्तर'** पर पुरस्कृत।

भाषा विज्ञानक मूर्धन्य विद्वान श्री झा अनेक स्वदेशी-विदेशी भाषाक ज्ञाता छथि। कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ संस्कृत तथा हिन्दीमे स्नातकोत्तरक डिग्री लेलनि। 1944ई० मे पटना विश्वविद्यालयसँ हिनक शोध-प्रबन्ध 'फॉरमेशन ऑफ मैथिली लैंग्वेज' पर डी. लिट्क उपाधि देल गेल। ई चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे अध्यापन करबाक संगहि पटना विश्वविद्यालयमे 'शोध अध्येता' एवं 'रिसर्च प्रोफेसर'क रूपमे संलग्न रहलाह। 1946ई० मे विशेष अध्ययनक हेतु पेरिस गेलाह तथा ओतय 'डॉक्टर-एस-लएतर्स' उपाधि प्राप्त कयलनि।

पाठ-संदर्भ : प्रस्तुत यात्रा-वर्णनमे विद्वान लेखक जर्मनीक विभिन्न स्तरक शिक्षण-प्रणालीक सुव्यवस्थित वर्णनक संगहि युद्धोत्तर जर्मनी मे पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया आदि देशसँ धकियाओल जर्मनक दयनीय दशाक चित्रण कयलनि अछि।

# जर्मनी-यात्रा

जर्मनीमे युद्धक पश्चात दुइ प्रकारेँ लोक-वृद्धि भेल अछि। एक तँ 'पोलैण्ड' तथा 'चेकोस्लोवाकिया' मे कतेको पुस्तसँ जे जर्मन सभहिक निवास छल तकरा सभकेँ खेहाड़ि-खेहाड़ि जर्मनीमे ठेलि देल गेल अछि। दोसर 'पूर्व प्रसिआ' जे सभ दिन जर्मनीमे छल, जकर जनता सोलह आना जर्मन छल, ताहिपर रूसक अधिकार भेलापर ओ अंश रूसमे जोड़ि देल गेल अछि तथा ओहिठामक निवासीकेँ पश्चिम दिशि जर्मनीमे ठेलि देल गेल अछि। फलस्वरूप जर्मनीक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय' ब्रेसलाउ' एखन पोलैण्डमे तथा प्रसिद्ध दार्शनिक काण्टक कार्य-स्थान 'कोएनिग्सवर्ग' विश्वविद्यालय, जाहि ठामसँ हमरा देशक विद्वान डाक्टर श्री जनार्दन मिश्र डाक्टरी पओने छलाह, से एखन रूसमे अछि। एहि दूनूटा विश्वविद्यालयमे एखन एकोटा जर्मन प्रोफेसर नहि अछि। 'कोएनिग्सवर्ग' क (जकर नव नाम केलिनग्राड पड़ल छैक) संस्कृतक अध्यापक श्री 'हरमुथ फनग्लासनओप' ह्यूविनगन जाय प्रोफेसर भेलाह।

एहन भगौड़ा लोक सभकेँ ने घर छैक, ने टाका छैक, ने वस्तुजात छैक। एकतँ जखन ओ सभ अपन पुस्तैनी निवास स्थानसँ बैलाओल जाइत गेल तखन अपन संगे जतबा वस्तु आनि सकैत ताहिसँ अधिक घरसँ आनि सकल नहि। गाड़ी आदि एकरा सभकेँ भेटतैक कतऽसँ। पहिने तँ जतेक चललैक ततबा लऽ चलल मुदा बाटमे भारी लगलासँ वस्तु सभ ठाम-ठाम छोड़ैत गेल। एना करैत जखन अपेक्षित टीसनपर पहुँचल तखन यदि ओकरा संगमे कोनो टा नीक वस्तु रहलैक तथा ताहिपर यदि पोल वा रूसी सिपाही वा जनताक ध्यान गेल, तखन ओहिठाम सेहो छिनाय गेलैक। एहि प्रसंग पता लागल जे कतेको लोककेँ नग्न कऽ देल गेल। पुनि बेचारा फाटल-चीटल कपड़ा माङि-चाङि कऽ पहीरि जर्मनी आयल।

ई सभ गप्प-सप्प करैत एकटा शिशु विद्यालयमे गेलहुँ । एहि विद्यालयमे दू वर्षसँ लऽ छठम वर्ष आरम्भ होयबा धरि नेना सभ पढ़ल

करैछ। एहिठाम विशेष कऽ चित्र बनायब तथा गीत गायब सैह सिखाओल जाइत छैक। पाठ समाप्त होयबाक दिन धरि अक्षर लिखा देल जाइत छैक। विद्यालयमे शिशु द्वारा बनाओल सहस्रो चित्र सभ राखल छल। ओ चित्र सभ तँ चित्रकारक अतिरिक्त हमरा ओहिठाम केओ नहि बनाओत। एहि शिक्षासँ एक तँ चित्रकारी तथा संगीतमे सहज प्रगति भऽ जाइत छैक, संग लागल सुन्दर लिपि लिखबाक अभ्यास तथा आगाँ चलि पद्यक घोँखबाक आ पढ़बाक भाव से अंकुरित भऽ जाइत छैक। मुदा एहि विद्यालय पर सरकारी नियन्त्रण ततबे टा छैक जे एकरा साहाय्य राज्य दिशिसँ भेटैत छैक तथा रुपैयाक अपव्यय तँ ने होइछ तकर पुछारी राखल जाइछ। एहि विद्यालयमे शिशुकेँ पढ़ायब अनिवार्य नहि। जकरा इच्छा भेलैक से अपना बेटा-बेटीकेँ एहि मध्य पठौलक । एहि हेतु अभिभावककेँ टाका सेहो देबऽ पड़ैछ।

छठम वर्ष आरंभ भेलापर शिशुकेँ प्राथमिक विद्यालयमे भर्ती करब अनिवार्य। एहिठाम ओ पाँच वर्ष धरि जर्मन लिखब, पढ़ब, बाजब सीखत; जोड़, घटाओ, गुणा-भाग से सीखत। वाणिज्य, खेती, इतिहास, भूगोल आदि सेहो एकरा कनेक-कनेक सिखाओल जयतैक।

ई भऽ गेलापर जे प्रतिभाशाली रहल से आगाँ लेल हाइ स्कूल मध्य प्रविष्ट भेल। जे तेहन प्रतिभाशाली नहि ओ श्रमिक वृत्तिसँ अपन जीवन-निर्वाह करत से अपन पहिलुकहि विद्यालयमे रहल। एहि प्रकारेँ दुइ श्रेणीमे छात्र विभाजित भेल। जे हाइ स्कूलमे गेल, तकरा जर्मन, लातिन तथा एक आओर विदेशी भाषा पढ़य पड़तैक। तकर अतिरिक्त इतिहास, भूगोल, विज्ञान, गणितक भिन्न-भिन्न विभागमे पढ़य पड़तैक। द्वितीय श्रेणीक छात्रकेँ आब पहिलुका पढ़लाहा विषय सभक विशेष शिक्षा तँ भेटबे करतैक, संग लागल वाणिज्य, कृषि, उद्योग आदि विषयक व्यावहारिक ज्ञानक शिक्षा देल जयतैक। दुनू प्रकारक विद्यालयमे प्रारंभिक शिक्षाक समाप्ति 14म वर्षमे भऽ गेल। एतबा दूर धरि कोनहु प्रकारक शुल्क सरकारी विद्यालयमे नहि लेल जाइछ।

मुदा सरकारी विद्यालयक संग लागल अनेको खानगी स्कूल अछि। ई खानगी स्कूल दुइ प्रकारक अछि–

(1) धनिकक नेना लोकनिक लेल (2) चर्चक अधीन।

एहू खानगी स्कूल सभहिमे पूर्वोक्त प्रकारक शिक्षा तँ देले जाइछ, संग लागल चर्चक अधीनस्थ स्कूलमे धार्मिक शिक्षा सेहो देल जाइछ। एहि

दुनू प्रकारक स्कूलकेँ सरकारी साहाय्य देल जाइछ, ओहिपर सरकारी अनुशासन रहैछ। मुदा सभटा खर्चा पुरयबाक भार स्कूल चलौनिहार पर रहैछ, सरकार पर नहि। एहि दुनू प्रकारक विद्यालयमे पढ़निहारकेँ फीस सेहो देबऽ पड़ैछ। एम्हर आब जे रूस अपन अधिकृत क्षेत्रमे शिक्षाक व्यवस्था कयलक अछि ताहि मध्य धार्मिक शिक्षाक हेतु जे व्यय स्कूल करत ताहिमे सरकार किछु नहि देतैक। तकर भार चर्चपर छैक।

एना कोनहु प्रकारक प्राथमिक शिक्षा 14 वर्ष धरि सभ प्राप्त करैछ। आब अभिभावक अपन इच्छा जे ओ नेनाकेँ आगाँ पढ़ाबथि वा नहि। जे नेना प्राथमिक विद्यालयमे 14 वर्ष धरि रहल से अपन एखनहि व्यवसायमे लागल वा अपन अभिलषित व्यवसायक शिक्षाक हेतु बनल स्कूल विशेषमे गेल। एहि ठाम पुनि हाइ स्कूलहुँमे प्राथमिक विद्या समाप्त कयनिहार संगीमे बहुतो ओकर संग भऽ जइतैक । हाइ स्कूलमे 3 वा 4 वर्ष पढ़लापर यदि देखल गेल जे कोनो विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक योग्य नहि, तखन ओहि ठामसँ ओकरा टेक्निकल दिशि पुनि लगा देल जाइछ।

एना छाँटि जे बचल से 18 सँ 19 वर्ष धरिक अवस्था धरि 'हाइ स्कूल' मे पढ़लक। हिटलरक शासन कालमे एकर पश्चात् प्रत्येक व्यक्तिकेँ एक वर्ष धरि सैनिकक शिक्षा देल जाइत छलैक। तखन की आगाँ पढ़ओ वा व्यवसाय धरओ। जे केओ आगाँ पढ़त से युनिवर्सीटीमे गेल वा विशेष प्रकारक विद्याक स्कूलमे प्रविष्ट भेल।

हाइ स्कूलसँ मैट्रिक्यूलेसन पास कऽ युनिवर्सीटीमे दुइ वर्ष पढ़ि कोनहु तीन विषयमे प्रवेशक प्राप्तिक प्रमाण पत्र प्राप्त कयलहि पर केओ व्यक्ति कोनहु प्रकारक अध्यापन वृत्तिक हेतु नियुक्त होयबा लेल सरकारी परीक्षामे प्रविष्ट भऽ सकैछ। बिनु सरकारी परीक्षा पास कयने अध्यापक वा हाकिम केओ नहि भऽ सकैछ। मैट्रिक्यूलेशन पास किरानीक काज मात्र पाबि सकैछ। आब जे केओ अपन जाहि सरकारी वृत्तिमे गेल से तदनुसार अपन काज कयलक। युनिवर्सीटी अध्यापक होयबा लेल पुनि डाक्टरीक परीक्षा पास कयल। एहि मध्य चारि वर्ष अन्यून समय लगैत छैक।

योग्यता आन विषयक की रहैत छैक से तँ जानि नहि । मुदा एतबा धरि अवश्य देखबामे आयल जे मैट्रिक क्लासक अधिकांश छात्र अपना देश.क मैट्रिकसँ अधिक शुद्ध अंग्रेजी बाजि सकैछ। फ्रांसमे ई अवस्था नहि।

एक तँ फ्रांसमे विदेशी भाषाक अध्ययन अनिवार्य नहि दोसर एहिठाम जे केओ अंग्रेजी नीक जकाँ पढ़नहु अछि, तकरहु अंग्रेजी बजबामे कष्ट भेल करैत छैक। एकर प्रधान कारण ई अछि जे फ्रांसमे केओ विदेशी अध्यापक नहि भऽ सकैछ। मुदा जर्मनी बाला विशेषत: आधुनिक भाषाक अध्यापनक हेतु ओहि भाषा-भाषी अध्यापकहिक नियुक्ति यथासंभव युनिवर्सीटीमे कयल करैछ। जे केओ फ्रेञ्च पढ़ने छल से फ्रेञ्च सेहो नीक बजैत सन बूझि पड़य। जतय विलाइतमे वा फ्रांसमे एकसँ अधिक भाषा जननिहारक संख्या बड़ थोड़ तेना जर्मनीमे हाइ स्कूलक छात्रमे जर्मनक अतिरिक्त एक आन भाषा जननिहार तँ सभ अछिए, अनेको दू वा तीन विदेशी भाषा आ से जर्मनसँ ततबे फराक जतबा अंग्रेजीसँ मैथिली।

आब केओ प्रश्न कऽ सकैत छथि जे यदि चारि वर्षक अध्ययन डाक्टरीक हेतु आवश्यक छैक, तखन अपना ओहिठाम अनेको व्यक्ति एक वर्षहुसँ कम एतय रहि कोना डाक्टर भऽ जाइत छथि। साधारणतया एतुक्का नियम छैक जे संसारक कोनहु विश्वविद्यालयमे मैट्रिक्यूलेसन पास कयलापर जतेक वर्ष केओ अध्ययनमे बितौने रहत, ततेक वर्षक समयक कमी एतय कऽ देल जाइत छैक। अत: अपना ओहिठामक केओ बी०ए० एहिठामसँ अतिशीघ्र डाक्टर भऽ सकैछ। एकटा छोट थीसिस लिखय तथा जर्मनमे गप्प-सप्प कऽ सकय। फ्रांस जकाँ एतय फेञ्चहिमे थीसिस लिखब अनिवार्य नहि।

●

**शब्दार्थ :** पुस्त = वंश-परम्परा; नियंत्रण = अधिकार; खानगी = निजी, व्यक्तिगत।

## प्रश्न ओ अभ्यास

1. जर्मनीक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय कोन अछि ?
2. भगौड़ा लोक सभक कंहन स्थिति छल ?
3. शिशु विद्यालयक स्थितिकेँ अपन शब्दमे लिखू।
4. जर्मनीमे छठम वर्षक बाद छात्रक विभाजन कोन आधार पर कयल जाइत अछि ?
5. युद्धक बाद जर्मनीमे लोक-वृद्धिक दृष्टिएँ की परिवर्तन भेल?

6. जर्मनीक खानगी स्कूलक स्थितिक वर्णन करू ।
7. फ्रांस आ जर्मनीमे अंग्रेजीक पठन-पाठनमे की अन्तर लेखक देखलनि?
8. व्यावसायिक शिक्षाक प्रति जर्मनक की दृष्टिकोण एहि पाठसँ प्रतिध्वनित होइछ ?
9. मैट्रिक वर्गक छात्रक अंग्रेजी वाचनक प्रसंग भारतसँ की भिन्नता लेखक पबैत छथि ?

**गतिविधि :**

1. एहि यात्रा-वृत्तांतमे आयल विश्वविद्यालय सभक नाम आ स्थान कंठस्थ करू।
2. एहि यात्रा-वृत्तांतक आधार पर जर्मनीक शिक्षा-व्यवस्था पर संक्षिप्त निबंध लिखू ।
3. एहि यात्रा वृत्तांतमे जाहि विदेशी भाषा सभक नाम आयल अछि, ओकरा कंठस्थ करू ।
4. प्रस्तुत लेखक आधार पर तत्कालीन जर्मनीमे भाषाक प्रति प्रचलित दृष्टिकोण पर टिप्पणी लिखू ।

**निर्देश :**

(क) शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ छात्रकेँ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे हिटलरसँ परिचित कराबथि।

(ख) युद्धक पहिने जर्मनी केहन छल ? शिक्षक छात्रकेँ परिचित कराबथि।

(ग) प्रमुख विदेशी भाषा सभसँ छात्रकेँ परिचित कराओल जाय।

(घ) शिक्षकसँ अपेक्षा जे पाठक आधार पर ओ भारत एवं तत्कालीन जर्मनीक शिक्षा-व्यवस्थाक तुलनात्मक स्वरूपसँ छात्रकेँ अवगत कराबथि ।

(ङ) हिटलरक शासनकालमे जे अनिवार्य सैन्य शिक्षा देल जाइत छल, ओकर औचित्य पर विचार करैत तथा अपन धारणासँ छात्रकेँ परिचित कराबथि ।

□